

सोभित कर नवनीत लिए

सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।

चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।

लट-लटकनि मनु मधुप-गन मादक मधूहिं पिए।

कतुला-कंठ, ब्रज केहरि-नख, राजत रुचिर हिए।

धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए॥

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/168/title/sobhit-kar-navneet-liye>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |